# P.K. UNIVERSITY SHIVPURI (M.P.)

## Sanskrit Literature

### Ph.D Course Work Pattern & Scheme

| Sr.No. | Title of Course | Paper Code | Maximum Mark's | Qualify Marks 65% | No. of Credits (Per week) | Teaching Lecture | Exam Duration |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1- | Research Methodology | PRESEAR101 | 100 | 65 | 04 | 60 | 03 hours |
| 2- | Sanskrit | PSANSDR102 | 150 | 65 | 06 | 90 | 03 hours |
| 3- | Research and Publication Ethics | PRESECP103 | 50 | 33 | 02 | 30 | 02 hours |
| **Total** | **-** | | **300** | **163** | **12** | **180** | |

# पी0के0 यूनिवर्सिटी थनरा शिवपुरी (म0प्र0)

## पी0एच0डी0 (संस्कृत) छः माह कोर्स वर्क

## प्रश्नपत्र – सम्बन्धित विषय का गहन अध्ययन

1. वेद –

   निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन

   अग्नि (1:) इन्द्र (2:12) पुरुष (10:90) हिरण्यगर्भ (10:121) नासदीय (10:129) वाक् (01:125) अर्थर्ववेद पृथ्वी (12:1) ब्राम्हण एवम् आरण्यक – सामान्य परिचय एवं विशेषतायें।

   उपनिषद – विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन (ईश, कंठ, केन वृहदारण्यक एवं तैत्तरीय उपनिषद से )

   वेदांगों का सामान्य परिचय

2— व्याकरण —

महाभाष्य (पस्पशह्निक) — शब्द की परिभाषा, शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध, व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण की पद्धिति

लघुसिद्धान्त कौमुदी—तिङन्त (भू एवं एछ) तद्धित (मत्वर्थीय) कारक प्रकरण, स्त्री प्रत्यय

भाषा विज्ञान — भाषा की परिभाष, भाषा का वर्गीकरण (आकृति मूलक एवं परिवारिक मूलक संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में), ध्वनियंत्र। परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम ग्रासमान तथा वर्नर) अर्थपरिवर्तन की दिशाएं एवं कारण, वाक्य का लक्षण एवं भेद, भारापीय भाषा परिवार का सामान्य परिचय भाषा तथा वाक् में अन्तर और बोली में अंतर

3. दर्शन —

व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न

— ईश्वर कृष्ण की सांख्यकारिका

— सदानन्द का वेदान्तसार

— पतंजलि का योगसूत्र

— तर्कसंग्रह दीपिका

— तर्कभाषा, केशवमिश्र

4. आर्षकाव्य —

रामायण — रामायण में आख्यान, रामायणकालीन समाज, रामायण की उपजीव्यता, रामायण का साहित्यिक महत्व

महाभारत — महाभारत में आख्यान, महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों पर महाभारत का प्रभा, महाभारत का साहित्यिक महत्व

पुराण — पुराण की परिभाषा, पौराणिक सृष्टिविज्ञान, पुराण एवं लौकिक कलायें, पौराणिक आख्यान, पुराणों का संक्षिप्त परिचय कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम विनयाधिकरण)

मनुस्मृति (प्रथम अध्याय)

5. काव्य एवं नाटक

रघुवंश (प्रथम एवं द्वितीय सर्ग)

किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग

नैषधीयचरितम् प्रथम सर्ग

गद्य – दशकुमारचरितम् अष्टम् उच्छवास

हर्षचरित (पञ्चमोच्छवास)

कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)

काव्यशास्त्र – काच्यप्रकाश – काव्यलक्षण

काव्यप्रयोजन, काव्यहेतुकाव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद अन्विताभिधानावाद, रस स्वरुप एवं भेद, रस दोष, काव्यगुण

अलंकार – अनुप्रास , श्लेष , वक्रोक्ति उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा समासोक्ति अपहनुति, निदर्शना अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना , विशेषोक्ति

ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत

नाटक – कर्णभार अभिज्ञानशकुन्तलम्, उत्तर रामचरितम, मुद्राराक्षस रत्नावली

नाट्यशास्त्र (भरत) – प्रथम द्वितीय तथा षष्ट अध्याय

दशरुपक – (प्रथम, द्वितीय अध्याय)